वन्नॉय, व्यवस्थाविवरण, व्याख्यान 4

© 2011, डॉ. रॉबर्ट वानॉय, डॉ. पेरी फिलिप्स, और टेड हिल्डेब्रांट

मोज़ेक लेखकत्व के लिए समर्थन का सर्वेक्षण

समीक्षा

पिछले सप्ताह रोमन अंक II के अंतर्गत, जो कि "व्यवस्थाविवरण का लेखकत्व और तिथि" है, हमने महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों का सर्वेक्षण किया। "डी" का अर्थ है "विभिन्न दिशाओं से क्लासिक वेलहाउज़ेन स्थिति के लिए चुनौतियां।" नंबर 1 उस 621 ईसा पूर्व की तारीख को बाद के, निर्वासन के बाद के समय में ले जाने की कोशिश कर रहा था। नंबर 2 था "621 से पहले लेकिन राजशाही काल के दौरान की तारीख के समर्थक," और वह वेल्च और वॉन राड होंगे। और फिर 3 भी पूर्व-राजशाही था, इसे पहले धकेल दिया, यहां तक कि राज्य काल से भी पहले, लेकिन मोज़ेक काल तक वापस नहीं। ई. रॉबिन्सन और आर. ब्रिंकर दोनों ने यह सिद्धांत विकसित किया कि सैमुअल ही मूल रूप से वह व्यक्ति था जो ड्यूटेरोनॉमी की पुस्तक के संकलन के पीछे था।

4. व्यवस्थाविवरण के लिए मोज़ेक तिथि के समर्थक

एक। प्रारंभिक मोज़ेक समर्थकों का सर्वेक्षण

तो यह हमें 4 पर लाता है, "व्यवस्थाविवरण के लिए मोज़ेक तिथि के समर्थक।" यह निश्चित रूप से पारंपरिक दृष्टिकोण है जो बाइबल स्वयं हमारे सामने प्रस्तुत करती है। मैं केवल इन नामों का उल्लेख करने के अलावा और कुछ नहीं करने जा रहा हूं, लेकिन आप वहां जो देख रहे हैं वह लोगों का एक क्रम है जो 1900 के दशक की शुरुआत से लेकर आज तक फैला हुआ है। जेम्स ऑर, पहले व्यक्ति, ने (1906) में द प्रॉब्लम ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट लिखा और मूल रूप से ड्यूटेरोनॉमी के लिए मोज़ेक मूल के लिए तर्क दिया। एचएम वेनर ने दो किताबें लिखीं, एक 1912 में और दूसरी 1920 में। 1912 में लिखी गई किताब को पेंटाट्यूचल स्टडीज कहा जाता था, और 1920 में लिखी किताब को द मेन प्रॉब्लम ऑफ ड्यूटेरोनॉमी कहा जाता था। तो, देखिए वेनर पहले से ही मोज़ेक मूल की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में ड्यूटेरोनॉमी पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। जे. रिडरबोस ने 1950 और 1951 में दो खंडों में ड्यूटेरोनॉमी पर एक टिप्पणी लिखी। वह

डच में लिखी गई है। मेरा मानना है कि इसका हाल ही में बाइबल विद्यार्थी की टिप्पणी श्रृंखला में ज़ोंडरवन द्वारा अनुवाद किया गया है। मुझे नहीं पता कि आप इससे परिचित हैं या नहीं। यह टिप्पणियों की एक डच श्रृंखला का अंग्रेजी अनुवाद है । अधिकांश डच टिप्पणियाँ 1950 के दशक में, 60 के दशक की शुरुआत में लिखी गईं, और वे धीरे-धीरे उन्हें अंग्रेजी में प्रकाशित कर रहे हैं।

बी। मोज़ेक लेखकत्व के अधिक हालिया रक्षक

जे. रिडरबोस पर बस एक टिप्पणी । जे. रिडरबोस - रिडरबोस नाम शायद आप मुख्य रूप से हरमन रिडरबोस के काम से परिचित हैं, जो हॉलैंड में न्यू टेस्टामेंट के प्रोफेसर थे, जिन्होंने एन आउटलाइन ऑफ पॉल्स थियोलॉजी लिखी थी, जो एक प्रमुख कार्य है जिसका अनुवाद किया गया है, साथ ही कुछ टिप्पणियाँ भी। हरमन रिद्दरबोस जे. रिद्दरबोस के पुत्र थे , जे . रिद्दरबोस के पिता ओल्ड टेस्टामेंट के प्रोफेसर थे। मैंने अपनी कुछ अन्य कक्षाओं में इसका उल्लेख किया है। उनके दो बेटे थे, एक का नाम एनएच रिद्दरबोस था और दूसरे का नाम एचएन रिद्दरबोस था । हरमन न्यू टेस्टामेंट के प्रोफेसर थे और वह ऐसे व्यक्ति हैं जिनसे अधिकांश अंग्रेजी बोलने वाले लोग परिचित हैं। निको ओल्ड टेस्टामेंट के प्रोफेसर थे, और जे. रिडरबोस भी ओल्ड टेस्टामेंट के प्रोफेसर थे। लेकिन निको रिडरबोस वह व्यक्ति थे जिनके साथ मैंने अध्ययन किया था। वह अब मर चुका है. लेकिन किसी भी मामले में, पिता जे. रिडरबोस ने व्यवस्थाविवरण के मोज़ेक लेखकत्व का बचाव किया। और फिर, लगभग उसी समय, जीसीएच एल्डर्स, जो डच भी थे, ने एक पुराने नियम की प्रस्तावना लिखी जिसका अंग्रेजी में अनुवाद नहीं किया गया है। पेंटाटेच का उनका संक्षिप्त परिचय, जैसा कि इसे कहा जाता है, अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। वह मोज़ेक मूल का बचाव करता है।

ओटी एलिस, इस देश में आने के लिए, कई वर्षों तक प्रिंसटन में प्रोफेसर रहे, और बाद में वेस्टमिंस्टर सेमिनरी के शुरुआती दिनों में वेस्टमिंस्टर में, उन्होंने द फाइव बुक्स ऑफ मोसेस लिखा। यह 1943 में लिखी गई पेंटाट्यूचल आलोचना का एक अच्छा उपचार है। आप द्वितीय विश्व युद्ध के युग में हैं। तब वेस्टमिंस्टर सेमिनरी के एक प्रोफेसर ईजे यंग ने अपना ओल्ड टेस्टामेंट परिचय लिखा, पहला संस्करण 1949 था जिसे बाद में 1960 में संशोधित और अद्यतन किया गया

था। उन्होंने ड्यूटेरोनॉमी के मोज़ेक मूल का भी बचाव किया। हाल ही में, 1969 में आरके हैरिसन का ओल्ड टेस्टामेंट का विशाल परिचय भी ड्यूटेरोनॉमी के मोज़ेक लेखकत्व का बचाव करता है।

इसलिए आपको ये नाम देने का मेरा उद्देश्य सिर्फ यह दिखाना है कि एक सदी की इस पूरी अवधि में जहां इस मोज़ेक लेखकत्व पर हमला किया गया है, वहां ऐसे लोग भी रहे हैं जिन्होंने मोज़ेक स्थिति का बचाव किया है। मैं कहूंगा कि वे सभी काफी हद तक एक जैसे हैं, हालांकि आलडर्स के साथ वह यहां-वहां कुछ "पोस्ट-मोज़ेक" वाक्यांशों की अनुमति देगा, विशेष रूप से मूसा की मृत्यु के विवरण के साथ व्यवस्थाविवरण के अंत में जिस पर मुझे कोई आपत्ति भी नहीं है. इसे पुस्तक के पूरा होने के बाद उसमें जोड़ दिया गया है। लेकिन एल्डर्स को यहां और वहां कुछ अन्य वाक्यांश मिलते हैं जो उन्हें लगता है कि मोज़ेक के बाद के थे, जो मुझे यकीन नहीं है कि आवश्यक हैं। लेकिन आम तौर पर वे सभी बहुत रूढ़िवादी हैं।

सी। पेंटाटेच रूढ़िवादी पुस्तकों के निर्धारण के लिए मूलभूत स्थिति है

छात्र प्रश्न: तो क्या यह कहना उचित है कि पेंटाटेच का यह मोज़ेक लेखकत्व रूढ़िवादी पुस्तकों के निर्धारण में एक बहुत ही मूलभूत स्थिति है?

वन्नॉय: हाँ, मुझे ऐसा लगता है। आप पाते हैं कि कुछ इंजीलवादी इनमें से किसी न किसी अंश को मोज़ेकोत्तर सामग्री के रूप में स्वीकार करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। आप देखिये यह शर्म की बात है। उदाहरण के लिए आप डच स्थिति को लें। आप इसे तीन चरणों में पता लगा सकते हैं: एल्डर्स पेंटाटेच के बहुत मजबूत मोज़ेक लेखक थे। उन्होंने समय के अंत तक जेईडीपी सिद्धांत के खिलाफ तर्क दिया। उन्होंने मोज़ेक के बाद की कुछ चीज़ों की अनुमति दी। उस कुर्सी पर उनके उत्तराधिकारी, निको रिडरबोस थे , जो एक कदम आगे बढ़े और पेंटाटेच में स्रोतों की अनुमति दी, शायद कुछ, और उन्हें लगा कि पेंटाटेच संभवतः प्रारंभिक साम्राज्य काल तक पूरा हो गया था। तो, आप देखते हैं कि आप नीचे नहीं जा रहे हैं। उन्होंने जेईडीपी चीज़ को थोक में नहीं खरीदा, लेकिन उन्होंने आल्डर्स की तुलना में इसमें बहुत अधिक रियायतें दीं। अब उस कुर्सी पर जो व्यक्ति है वह कॉर्नेलियस हेल्मन नाम का व्यक्ति है ; उन्होंने लगभग संपूर्ण जेईडीपी दृष्टिकोण खरीद लिया। लेकिन आप शायद ही उनके दृष्टिकोण को पवित्रशास्त्र का इंजीलवादी दृष्टिकोण भी

कह सकते हैं। तो तीन चरणों में आप एक रूढ़िवादी स्थिति से तीन पीढ़ियों में पूरी तरह उदारवादी स्थिति की ओर बढ़ते हैं। इतिहास इसी तरह चलता दिखता है। आप शुरू करते हैं, आप इतना दरवाजा खोलते हैं, और फिर यह और अधिक खुलता है और फिर मूल स्थिति चली जाती है।

यह बहुत उलझा हुआ और बहुत जटिल है। मुझे लगता है कि इसके पीछे दार्शनिक बातें हैं. संभवतः बौद्धिक अखंडता के बौद्धिक प्रश्न हैं। वे अक्सर यहां एक प्रश्न से शुरुआत करते हैं जिसका हमारे पास पर्याप्त उत्तर नहीं है इसलिए हमें इस बिंदु पर स्वीकार करना होगा। मेरे लिए, इसके पीछे पवित्रशास्त्र का मूल दृष्टिकोण है। आप पवित्रशास्त्र के बारे में अपना दृष्टिकोण कहाँ से प्राप्त करते हैं? क्या आप पवित्रशास्त्र के बारे में अपना दृष्टिकोण उस दृष्टिकोण से प्राप्त करते हैं जो पवित्रशास्त्र अपने लिए दावा करता है, उस दृष्टिकोण से जो मसीह का पुराने नियम के धर्मग्रंथों के प्रति था? यह एक निगमनात्मक प्रक्रिया या विधि है। आप इस तरह से निगमनात्मक रूप से अपना दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं या आप इन सभी समस्याओं को एक-एक करके देखकर आगमनात्मक रूप से इसमें शामिल होते हैं और तब तक रुके रहते हैं जब तक कि आप उन सभी को हल नहीं कर लेते। इसलिए आप इस निष्कर्ष पर न पहुँचें कि पवित्रशास्त्र विश्वसनीय है। मुझे लगता है कि इनमें से बहुत से लोग इसी तरह की कार्यप्रणाली के साथ काम करते हैं। तब उन्हें लगता है कि वे यह नहीं कह सकते कि पवित्रशास्त्र पूरी तरह से विश्वसनीय है क्योंकि उनके पास इस या उस समस्या का उत्तर नहीं है, और फिर उन्हें लगता है कि यह बौद्धिक अखंडता का मामला है। मुझे नहीं लगता कि मैं हेल्मन की ईसाई धर्म पर भी सवाल उठाऊंगा क्योंकि मैं उस व्यक्ति को जानता हूं। और वह एक धर्मात्मा व्यक्ति है. लेकिन धर्मग्रंथ के बारे में उनके विचार बिल्कुल अलग हैं। लेकिन मुझे लगता है कि यह उनके दृष्टिकोण के कारण है।

डी। मोज़ेक लेखकत्व का समर्थन करने वाली अन्य पुस्तकें

मुझे उसमें कुछ जोड़ना चाहिए, हालाँकि यह आपकी सूची में नहीं है। उल्लेख करने के लिए कुछ और पुस्तकें हैं, इसलिए मुझे आगे बढ़ने दीजिए। जीटी मैनली ने 1957 में द बुक ऑफ़ द लॉ: स्टडीज़ इन द डेट ऑफ़ ड्यूटेरोनॉमी नामक पुस्तक लिखी ; यह आपकी ग्रंथ सूची में है। मैं वापस आऊंगा और उस किताब पर कुछ टिप्पणियां करूंगा। बी. हाल्वर्डा डच हैं। फिर से दुर्भाग्य

से, इसका अनुवाद नहीं किया गया है, लेकिन पृष्ठ 5, " व्यवस्थाविवरण में पूजा का केंद्रीकरण" के अंतर्गत आप बी. हलवेर्दा को देखते हैं , चौथी प्रविष्टि। और डच में इसका शीर्षक है वह स्थान जिसे प्रभु चुनेंगे। वह व्यवस्थाविवरण 12 में उस वाक्यांश और केंद्रीकरण मुद्दे में इसके निहितार्थों पर चर्चा करता है जो वेलहाउज़ेन के सिद्धांत के केंद्र में है। मैं उस पर बाद में भी आऊंगा. और फिर, निःसंदेह, मेरेडिथ क्लाइन जिन्होंने द ट्रीटी ऑफ़ द ग्रेट किंग लिखी। उनकी पुस्तक व्यवस्थाविवरण और संधि प्रपत्र, महान राजा की संधि: व्यवस्थाविवरण की वाचा संरचना, अध्ययन और टिप्पणी, 1963 के अंतर्गत पृष्ठ 4 पर सूचीबद्ध है। अंत में, मुझे इसमें पीटर सी. क्रेगी को जोड़ना चाहिए, जो टिप्पणियों में से एक है जिसे आप इस पाठ्यक्रम के परिचय में पढ़ेंगे। 1976 में प्रकाशित ड्यूटेरोनॉमी की पुस्तक पर पुराने नियम पर नई अंतर्राष्ट्रीय टिप्पणी में, वह मोज़ेक मूल के लिए तर्क देते हैं। तो यह अकादमिक टिप्पणी का सबसे हालिया, विस्तृत, अच्छा ठोस आधार है जो इस पद के लिए तर्क दिया गया है।

जेए थॉम्पसन मोज़ेक तिथि का समर्थन करते हैं। मैं वापस आऊंगा और उसके बारे में थोड़ी बात करूंगा, लेकिन उन्हें लगता है कि वर्तमान में हमारे पास व्यवस्थाविवरण का अंतिम रूप मोज़ेक के बाद का है। मैं पूरी तरह से समझ नहीं पा रहा हूं कि वह इस निष्कर्ष पर क्यों पहुंचे लेकिन हम इस पर बाद में चर्चा करेंगे। मैककॉनविले मूल रूप से मोज़ेक उत्पत्ति का तर्क देते हैं।

इ। व्यवस्थाविवरण की मोज़ेक उत्पत्ति पर हालिया कार्य

अब उन लोगों की सूची में से, मैं उस सूची में चार लोगों का उल्लेख करना चाहूंगा जो व्यवस्थाविवरण प्रश्न के विभिन्न पहलुओं पर काम कर रहे थे, लेकिन जिनके काम पुस्तक के लिए मोज़ेक मूल की पुष्टि करने में प्रत्येक के पूरक हैं। मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है कि पिछले 25 वर्षों में इस प्रश्न पर, आप कह सकते हैं कि नई ज़मीन तैयार हुई है। इसलिए, भले ही इस पर पूरी एक सदी से बहस चल रही है, पिछले 25 वर्षों में - कुछ मामलों में जैसे कि हाल ही में मैककॉनविले की पुस्तक में - कुछ नए काम किए गए हैं जो मोज़ेक मूल के तर्क की वैधता की पुष्टि करते हैं और उसे बढ़ाते हैं। . मुझे लगता है कि ऐसे चार लोग हैं जिनका एक साथ काम करना, इस पूरे जेईडीपी सिद्धांत और विशेष रूप से इसमें ड्यूटेरोनॉमी के स्थान पर पुनर्विचार के लिए

एक मजबूत मामला प्रदान करता है। मैं उन्हें इस क्रम में लूंगा: सबसे पहले, डचमैन हाल्वर्डा । जैसा कि मैंने बताया, वह पूजा के केंद्रीकरण के मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करता है क्योंकि यह वेलहाउज़ेन के सिद्धांत से संबंधित है। वह विशेष रूप से व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 की व्याख्या पर चर्चा करते हैं, जो वेलहाउज़ेन के सिद्धांत के लिए एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यही कारण है कि मैं चाहता था कि आप अध्याय 12 का अनुवाद करें और इसे ध्यान से देखें। हम अगले एक या दो सप्ताह में कक्षा में इस पर चर्चा करने जा रहे हैं। लेकिन हलवेरदा उस केंद्रीकरण मुद्दे को संबोधित करते हैं।

फिर दूसरी बात, जीटी मैनली ने अपनी पुस्तक में, पूरा शीर्षक, द बुक ऑफ द लॉ: स्टडीज इन द डेट ऑफ ड्यूटेरोनॉमी। वह वहां केंद्रीकरण के मुद्दे सहित कई सवालों को संभालता है, लेकिन वह जेई और डी और फिर पी कानून कोड के बीच कथित विकासात्मक संबंधों पर चर्चा करने में विशेष रूप से मजबूत है। वेलहाउज़ेन सिद्धांत के अनुसार, इन तीन कानून कोडों के बीच एक विकासात्मक संबंध है। वह जो करता है वह सामग्री की तुलना करता है जिसे वे "जेई" कहते हैं, जिसे वे "डी" कहते हैं, जिसे वे "पी" कहते हैं, वह उसकी तुलना करता है और विकासात्मक सिद्धांत के साथ कई समस्याओं की ओर इशारा करता है। तो, आप जानते हैं, भले ही सतह पर यह प्रभावशाली लग सकता है, मैनली ने अपनी पुस्तक में इस तरह के विचार के साथ कुछ समस्याओं की ओर इशारा किया है।

फिर तीसरे स्थान पर मेरेडिथ क्लाइन हैं। मेरेडिथ क्लाइन की ताकत एक बिल्कुल अलग दृष्टिकोण है। वह व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के साहित्यिक रूप के साथ काम करता है। वह विशेष रूप से हित्ती संधि ग्रंथों के साथ सादृश्य के परिप्रेक्ष्य से इसके रूप और सामग्री दोनों को देखता है, और वह पाता है कि हित्ती संधि ग्रंथों और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की संरचना के बीच घनिष्ठ पत्राचार है। हित्ती संधि ग्रंथ लगभग मोज़ेक युग के माने जाते हैं, और निश्चित रूप से 600 ईसा पूर्व के नहीं, इसलिए मैं क्लाइन की स्थिति पर आपके साथ अधिक विस्तार से जाना चाहता हूं। लेकिन वह जो उपयोग करता है उसे आप वास्तव में मोज़ेक उत्पत्ति के लिए बहस करने के लिए "फॉर्म क्रिटिकल विश्लेषण" कहेंगे, ठीक उसी समय में एक अतिरिक्त-बाइबिल सादृश्य ढूंढकर जब ड्यूटेरोनॉमी खुद का प्रतिनिधित्व करता है। मुझे लगता है कि वह इसके लिए

एक अच्छा मामला बनाता है; मुझे लगता है कि उनके पास काफी मजबूत तर्क है। आप प्रमाण के संदर्भ में बात नहीं कर सकते. मुझे नहीं लगता कि आप पुस्तक की रचना के लिए मोज़ेक तिथियों को किसी भी प्रश्न से परे साबित करने के लिए इस तरह के तर्कों का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन आप निश्चित रूप से एक मॉडल बना सकते हैं जो तारीख के साथ फिट बैठता है और जो मोज़ेक तिथि का समर्थन करता है।

चौथा व्यक्ति गॉर्डन मैककॉनविल है, जो किताब आप पढ़ रहे हैं। व्यवस्थाविवरण में कानून और धर्मशास्त्र। अब मूल रूप से मैककॉनविले की पुस्तक में, पेंटाटेच में अन्यत्र कानूनों के संबंध में कानूनों को देखने के बजाय, यह दिखाते हुए कि डी जेई से कैसे संबंधित है या डी पी से कैसे संबंधित है, मैककॉनविले मुख्य रूप से ड्यूटेरोनॉमी के नियमों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो ड्यूटेरोनॉमी के धर्मशास्त्र को विशिष्ट रूप से प्रतिबिंबित करते हैं। उनका कहना है कि इन सभी कानूनों के पीछे एक धर्मशास्त्र है, और कानून धर्मशास्त्र को प्रतिबिंबित करते हैं। उनके तर्क में अगला कदम यह है कि वह धर्मशास्त्र को उस समय इज़राइल की चिंताओं को प्रतिबिंबित करता है जब वे वादा किए गए देश में प्रवेश करने वाले थे, जो निश्चित रूप से, मूसा के अंत में मूसा का समय होगा। ज़िंदगी। वे वादा किए गए देश में प्रवेश करने वाले हैं। वह पाता है कि कानूनों के पीछे मुद्दे उस तरह की स्थिति और धर्मशास्त्र को दर्शाते हैं जो उस स्थिति से संबंधित है जहां वे वादा किए गए देश में पार करने वाले हैं। तो आप देख सकते हैं कि वह जो हासिल कर रहा है वह उस पुस्तक के पीछे का धर्मशास्त्र है जिसके बारे में वह कहता है कि वह मूसा के समय के साथ फिट बैठता है।

तो, आप मैककॉनविले को उस धार्मिक दृष्टिकोण से ड्यूटेरोनॉमी को देखते हुए पाएंगे। आप क्लाइन को फॉर्म-क्रिटिकल संरचनात्मक दृष्टिकोण से देखते हुए पाएंगे। आपको मैनली मिलता है जो वेलहौसेन सिद्धांत को देखता है और उस तरह के दृष्टिकोण के साथ समस्याएं दिखाता है। आपको हैलवर्ड मिलता है जो पूजा के मुद्दे के केंद्रीकरण के साथ काम करता है। तो मैं जो कह रहा हूं वह यह है कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर हाल के कई अध्ययन मोज़ेक उत्पत्ति की पुनः पुष्टि करने में एक-दूसरे के पूरक हैं।

यदि आप अपनी ग्रंथ सूची, पृष्ठ 5 को देखें, तो मेरे पास है, "व्यवस्थाविवरण में पूजा का केंद्रीकरण।" कुंडल का वह लेख , "अभयारण्य: पूर्व-निर्वासित इज़राइल में केंद्रीय और स्थानीय, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के विशेष संदर्भ में।" यह एक उपयोगी लेख है. और मैककॉनविले अध्याय 2: "अल्टार कानून और पंथ का केंद्रीकरण।" वेनहम एक अन्य लेख में पढ़ रहे हैं, "द डेट ऑफ़ ड्यूटेरोनॉमी: लिंचपिन इन ओल्ड टेस्टामेंट क्रिटिसिज्म," 1985 में थेमिलिओस में । वे तीन उपयोगी लेख हैं। मैं इस बिंदु पर आपका ध्यान पृष्ठ छह पर तीसरी प्रविष्टि की ओर भी आकर्षित कर सकता हूं, जो अभी सामने आई है। एनजे पॉल. अब वह डच में है. यह 1988 का शोध प्रबंध है। और इसका शीर्षक है "द आर्किमिडीयन प्वाइंट ऑफ पेंटाट्यूचल क्रिटिसिज्म।" और वह जिस बारे में बात कर रहा है वह व्यवस्थाविवरण को डेट करने के बारे में है। पूरा शोध प्रबंध इसी पर है जहां वह मूल रूप से मोज़ेक उत्पत्ति के लिए बहस कर रहे हैं। तो यह सचमुच रोमांचक है। मुझे इसकी एक प्रति लगभग दो सप्ताह पहले ही मिली, इस पाठ्यक्रम के शुरू होने से ठीक पहले।

मैं आपका ध्यान विशेष रूप से उन चार लोगों की ओर आकर्षित करना चाहता था। और आप क्लाइन और मैककॉनविले पढ़ रहे हैं। मैं किसी बिंदु पर क्लाइन पर चर्चा करने जा रहा हूं क्योंकि मुझे लगता है कि उसका तर्क महत्वपूर्ण है। मैं हैलवर्ड पर भी चर्चा करने जा रहा हूं। मैं मैककॉनविले या मैनली के साथ ज्यादा कुछ नहीं कर पाऊंगा। आप मैककॉनविले पढ़ रहे होंगे। मैनली, दुर्भाग्य से, प्रिंट से बाहर है, इसलिए इसका उपयोग करना कठिन है, लेकिन मैं बस आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं।

तृतीय. व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का वाचा प्रपत्र और इसके ऐतिहासिक निहितार्थ

A. पुस्तक की संरचनात्मक अखंडता पर अक्सर सवाल उठाए गए हैं

तो, चलिए आपकी रूपरेखा पर रोमन अंक III पर चलते हैं। वह है "व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का अनुबंधित रूप और इसके ऐतिहासिक निहितार्थ।" अब मैं रोमन अंक III के तहत जो कुछ कहने जा रहा हूं वह मेरेडिथ क्लाइन के महान राजा की संधि में उनके काम से आता है। लेकिन "ए" का अर्थ है "पुस्तक की संरचनात्मक अखंडता पर अक्सर सवाल उठाया गया है।" वेलहाउज़ेन ने कहा कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का एक मूल मूल था, जिसके बारे में उन्होंने

कहा कि यह अध्याय 12 से 26 था। तो, आप 1 से 11 देखते हैं, और 27 से 34, उन्हें लगा कि ये बाद के अभिवृद्धि हैं। पुस्तक का मूल मूल मोज़ेक नहीं था, और निस्संदेह, देर हो चुकी थी। लेकिन वह जो कह रहे हैं वह यह है कि संरचनात्मक रूप से आपकी पुस्तक में एकता नहीं है। 12 से 26 का मूल कोर है, बाकी को बाद में जोड़ा गया था; दूसरे शब्दों में, 621 ईसा पूर्व के बाद के क्लाइन ने एडम वेल्च के बारे में कहा, जो उन लोगों में से एक थे जिनके बारे में हमने 621 से पहले की तारीख के अधिवक्ताओं के तहत चर्चा की थी, लेकिन राजशाही काल के दौरान, क्लाइन कहते हैं, "वेल्च को पूरी किताब में भ्रम मिलता है लेकिन वे मानते हैं रूपरेखा, विशेष रूप से, इतनी निराशाजनक रूप से अव्यवस्थित है कि वह एक संपादक के बारे में बात करना भ्रामक घोषित करता है, क्योंकि इससे पता चलता है कि अराजकता में कुछ हद तक व्यवस्था पेश की गई थी। यह व्यवस्थाविवरण के बारे में एडम वेल्च का अनुमान है: इतना अराजक कि इसमें कोई संरचनात्मक एकता या व्यवस्था नहीं है। वह किसी संपादक के बारे में बात भी नहीं करना चाहते क्योंकि उनका मानना है कि इससे यह पता चलेगा कि कुछ हद तक व्यवस्था लागू की गई है जो उन्हें नहीं मिलती।

इन आलोचनात्मक विद्वानों द्वारा अक्सर चर्चा की जाने वाली एक अन्य समस्या को पुस्तक के लिए "दो परिचय" कहा जाता है। इनमें से कई लेखकों का कहना है कि व्यवस्थाविवरण की दो प्रस्तावनाएँ हैं। वे कहते हैं कि अध्याय 1 से 4 में एक परिचय है, और फिर अध्याय 5 से 11 में एक और परिचय है। वे कहते हैं, यह अतिरेक है, दो परिचय। जी. अर्नेस्ट राइट ने इंटरप्रेटर की बाइबिल श्रृंखला में ड्यूटेरोनॉमी पर टिप्पणी लिखी, जो मेरा मानना है कि 1960 के दशक की एक काफी मानक आलोचनात्मक टिप्पणी है। राइट, इंटरप्रेटर्स बाइबल खंड 2, इन दो परिचयों के बारे में कहता है: "किसी को भी दूसरे की आवश्यकता नहीं है। वे एक-दूसरे से स्वतंत्र लगते हैं। और फिर वह मूल रूप से मार्टिन नोथ द्वारा समर्थित एक दृष्टिकोण को अपनाता है कि ड्यूटेरोनॉमी को वास्तव में पेंटाटेच के एक भाग के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए, लेकिन यह उसकी पहली पुस्तक है जिसे मार्टिन नोथ "ड्यूटेरोनॉमिस्टिक हिस्ट्री" कहते हैं। यह व्यवस्थाविवरण से लेकर 2 राजाओं के अंत तक चलता है: व्यवस्थाविवरण, जोशुआ, न्यायाधीश, सैमुअल और राजा। ड्यूटेरोनॉमी सामग्री के उस संग्रह की पहली पुस्तक है, जो उन्हें लगता है कि निर्वासन के बाद के

समय में एक व्यक्ति द्वारा लिखी या संपादित की गई थी। फिर वह जो कहता है वह यह है कि व्यवस्थाविवरण उस व्यवस्थाविवरणवादी इतिहास की पहली पुस्तक है, और व्यवस्थाविवरण 1 से 4 समग्र रूप से उस व्यवस्थाविवरणवादी इतिहास का परिचय है, जबकि अध्याय 5 से 11 सिर्फ व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का परिचय है। लेकिन मैंने सिर्फ यह बताने के लिए उनमें से कुछ चीजों का उल्लेख किया है कि पुस्तक की संरचनात्मक अखंडता पर अक्सर सवाल उठाए गए हैं। दूसरे शब्दों में, इनमें से बहुत सारे आलोचनात्मक विद्वान पुस्तक के पास आते हैं और उन्हें पुस्तक की कोई सुसंगत संरचना नहीं मिलती।

व्यवस्थाविवरण इतिहास व्यवस्थाविवरण से लेकर राजाओं के अंत तक का है। निःसंदेह, आप इसे व्यवस्थाविवरणवादी इतिहास क्यों कहेंगे इसका कारण यह है कि ऐतिहासिक आख्यानों के माध्यम से जो धर्मशास्त्र प्रतिबिंबित होता है वह व्यवस्थाविवरण के धर्मशास्त्र का अनुसरण करता है, दिलचस्प बात यह है कि। अब, निःसंदेह, वे जो कह रहे हैं वह यह है कि यह उस तरह की धार्मिक योजना है जो पहले के इतिहास पर थोपी गई है क्योंकि व्यवस्थाविवरण 621 तक अस्तित्व में नहीं था। तो, आप व्यवस्थाविवरण के इतिहास को कैसे प्रभावित करेंगे, मान लीजिए, अवधि न्यायाधीशों की, यदि पुस्तक 621 ईसा पूर्व तक नहीं लिखी गई थी? वे कहेंगे कि न्यायाधीशों की पूरी अवधि को इस तरह से पुनर्गठित या वर्णित किया गया है, जो व्यवस्थाविवरण के धर्मशास्त्र को दर्शाता है। उन सभी पुस्तकों में एक बहुत ही वास्तविक ड्यूटेरोनोमिक प्रभाव है, और निश्चित रूप से, यदि आप इसे वहां रखते हैं जहां यह मोज़ेक युग में है, तो आप उम्मीद करेंगे कि उन सभी पुस्तकों के माध्यम से ड्यूटेरोनोमिक प्रभाव होगा।

बी। व्यवस्थाविवरण के संरचनात्मक पैटर्न के बारे में वॉन रैड का दृष्टिकोण

ठीक है, आपकी शीट पर "बी" गेरहार्ड वॉन रैड है जिसने अपनी समस्या हेक्साटेच, 1938 में ड्यूटेरोनॉमी के संरचनात्मक पैटर्न के महत्व पर ध्यान आकर्षित किया था। मैंने इसका उल्लेख किया था जब हम वेलहाउज़ेन स्थिति के लिए चुनौतियों को देख रहे थे। वॉन रैड ने 621 से पहले की तारीख के लिए तर्क दिया, लेकिन अभी भी राजशाही काल में; लेकिन दिलचस्प बात यह है कि उनके तर्क का एक हिस्सा किताब की संरचना में पाया गया था। यह उन्हें उनके पुराने

आलोचनात्मक विद्वानों, या यहाँ तक कि उनके कुछ समकालीनों से अलग करता है जिन्होंने पुस्तक को अव्यवस्थित पाया। उन्होंने हेक्साटेच की अपनी समस्या, पृष्ठ 26 और 27 में समग्र रूप से पुस्तक की संरचना पर ध्यान आकर्षित किया। मुझे लगता है कि मैंने पहले इसका उल्लेख किया था, लेकिन वह कहते हैं, "स्पष्ट रूप से, फॉर्म-आलोचना के दृष्टिकोण से, कोई भी नहीं व्यवस्थाविवरण की उत्पत्ति की ऐसी किसी भी तस्वीर को स्वीकार करेंगे। यह इस तथ्य की मान्यता से वर्जित है कि व्यवस्थाविवरण एक जैविक संपूर्ण रूप में है।" वह आगे कहते हैं, "साहित्यिक मानदंडों के आधार पर हम विभिन्न स्तरों और अभिवृद्धियों की संख्या में अंतर कर सकते हैं, लेकिन रूप के मामले में विभिन्न घटक एक अविभाज्य एकता बनाते हैं। इस प्रकार यह प्रश्न अपरिहार्य रूप से उठाया जाता है कि व्यवस्थाविवरण के स्वरूप का मूल उद्देश्य क्या था जैसा कि अब हमारे पास है?"

उनका कहना है कि संरचनात्मक रूप से पुस्तक में चार खंड हैं। यह उनकी हेक्साटेच की समस्या, पृष्ठ 27 में है। उन्हें लगता है कि पुस्तक संरचनात्मक रूप से, अध्याय 1 से 11 में, सिनाई की घटनाओं की एक ऐतिहासिक प्रस्तुति और उन घटनाओं से जुड़ी पैरानेटिक सामग्री को दर्शाती है। " पैरैनेटिक ," क्या आप जानते हैं कि वह क्या है? " पैरानेटिक " का अर्थ है उपदेश। यह ग्रीक पैरानेसिस से है । व्यवस्थाविवरण में उस प्रकार का उपदेशात्मक चरित्र है। यह उपदेश देता है. फिर संधि का दूसरा खंड कानून है, अध्याय 12 से 26। अध्याय 12 से 26 कानूनी सामग्री है। फिर वह 26:16 से 19 में वाचा की मुहर की बात करता है, और व्यवस्थाविवरण 27 और उसके बाद के आशीर्वाद और शाप की बात करता है।

तो उन्होंने जो निष्कर्ष निकाला वह यह है कि वह पूरी किताब को आलोचनात्मक ढंग से देखना चाहते हैं। कौन सी स्थिति इस प्रकार के स्वरूप को जन्म देगी? और फिर वह जो कहते हैं वह यह है, "इन चार खंडों में हम एक बार फिर से उस बुनियादी विशेषताओं को पहचानते हैं जो पहले एक सांस्कृतिक समारोह था जो स्पष्ट रूप से उसी त्योहार से जुड़ा था जो जेई के साथ सिनाई परंपरा में परिलक्षित होता है।" तो, जिस तरह से वह इसे देखता है वह संरचना को देखता है, और वह मानता है, रूप-आलोचनात्मक रूप से, कुछ प्रकार का सांस्कृतिक उत्सव था जिसने इस तरह के साहित्यिक रूप का निर्माण किया जो पुस्तक में परिलक्षित होता है। मैं बाद में उस दृष्टिकोण पर

वापस आऊंगा, लेकिन इस बिंदु पर ध्यान आकर्षित करने का मेरा मुख्य कारण वॉन राड है जो महत्वपूर्ण विद्वानों की आम सहमति के खिलाफ जा रहा है कि पुस्तक अराजक है। वह कह रहा है, "नहीं, वहाँ एक संरचना है।" यह कार्यप्रणाली में स्रोत आलोचनात्मक दृष्टिकोण से भिन्न है लेकिन विभिन्न पूर्वधारणाओं का उपयोग करते समय इसमें समानता के कुछ बिंदु हैं।

सी। मेरेडिथ क्लाइन: महान राजा की संधि

1. व्यवस्थाविवरण एक अनुबंध नवीकरण दस्तावेज़ है

ठीक है, "सी" मेरेडिथ क्लाइन ने ड्यूटेरोनॉमी की संरचना पर एक नया दृष्टिकोण खोलने के लिए पवित्रशास्त्र की अखंडता का सम्मान करते हुए एक फॉर्म-क्रिटिकल पद्धति का उपयोग किया, जिसका इसकी व्याख्या और तारीख पर प्रभाव पड़ता है। अब, यह सब आपकी रूपरेखा में है। मैं "सी" के अंतर्गत क्लाइन के तर्क को संक्षेप में प्रस्तुत करना चाहता हूं। तो "1" क्लाइन की थीसिस का कथन है। महान राजा की अपनी संधि के पृष्ठ 28 पर वे कहते हैं, "यहाँ वकालत की जाने वाली स्थिति यह है कि व्यवस्थाविवरण एक अनुबंध नवीनीकरण दस्तावेज़ है जो अपनी कुल संरचना में मोज़ेक युग की आधिपत्य संधियों के क्लासिक कानूनी रूप को प्रदर्शित करता है।" मुझे लगता है कि यह वाक्य आपको उसकी थीसिस देता है।

2. क्लाइन की व्यवस्थाविवरण की रूपरेखा

चलिए "2" पर चलते हैं यही उनकी थीसिस का परिचय है. "2" है, "क्लाइन की व्यवस्थाविवरण की रूपरेखा।" जब क्लाइन पुस्तक को देखता है, तो वह इसे पांच भागों में तोड़ देता है: पहला, एक प्रस्तावना 1:1 से 5; दूसरा, एक ऐतिहासिक प्रस्तावना, 1:6 से 4:49 तक वाचा का इतिहास; तीसरा, शर्तें - 5:1 से 26:19 में अनुबंधित जीवन। यह मूल रूप से अध्याय 5 से 26 है। अब, यह दो उप-भागों 5:1 से 11:32 में विभाजित है, दूसरे शब्दों में अध्याय 5 से 11 "महान" या "बुनियादी आज्ञाएँ" हैं। मूल रूप से महान आज्ञा है: प्रभु अपने ईश्वर से प्रेम करो, अकेले उसकी सेवा करो, वाचा निष्ठा, विशेष रूप से प्रभु के प्रति आपकी वफादारी का मौलिक दायित्व। "बी" सहायक आज्ञाएँ हैं; वे विस्तृत शर्तें हैं, और वह अध्याय 12 से 26 तक हैं। फिर चौथा, प्रतिबंध--

संविदा अनुसमर्थन 27:1 से 30:20; यह आशीर्वाद और श्राप और अन्य चीज़ों का अनुभाग है। फिर 31 से 34 वंशवादी स्वभाव, या वाचा की निरंतरता है। यह मूसा की ओर से, या वंशवादी स्वभाव पर यहोशू के उत्तराधिकार का प्रावधान है। तो यह वह संरचना है जिसे मेरेडिथ क्लाइन पुस्तक में देखता है।

के. किचन का जो लेख मैंने आपसे पढ़ने के लिए कहा था वह वास्तव में निकल्सन की इस पुस्तक की समीक्षा है। निकल्सन संपूर्ण अनुबंध सादृश्य को अस्वीकार करता है और किचन, मुझे लगता है, दर्शाता है कि निकलसन की अस्वीकृति अनुचित है।

3. हित्ती संधि ग्रंथों के मानक तत्व

संख्या 3 है, "हित्ती संधि ग्रंथों के मानक तत्व।" हमने संधि ग्रंथों और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की संरचना के बीच इस सादृश्य के बारे में बात की। संधि ग्रंथों की संरचना क्या है? यदि आप इन हित्ती संधियों को देखें तो हर कोई काफी हद तक सहमत है, उनमें से बीस हैं, वे नियमित रूप से इस प्रकार की संरचना का पालन करते हैं। उनके पाँच तत्व हैं: 1) एक प्रस्तावना जो महान राजा का परिचय देती है, उसका नाम, उसकी उपाधियाँ, उस तरह की चीज़ बताती है; 2) ऐतिहासिक प्रस्तावना महान राजा और उसके जागीरदार के बीच संबंधों के पिछले इतिहास का सारांश प्रस्तुत करती है; 3) शर्तें: ये वे दायित्व हैं जो जागीरदार पर लगाए गए हैं। उन्हें जागीरदार पर रखा गया है और वे महान राजा के प्रति दायित्व की भावना पर आधारित हैं क्योंकि महान राजा ने जागीरदार के लिए कुछ चीजें की हैं। इसलिए, सुजरेन, या राजा के पास यह उम्मीद करने का कारण है कि जागीरदार इन शर्तों का पालन करके बदले में जवाब देगा।

उन शर्तों को दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है: बुनियादी शर्तें और एक विस्तृत शर्तें । एक बुनियादी शर्त वफादारी का मौलिक दायित्व है, और विस्तृत शर्तें महान राजा के लिए की जाने वाली सभी प्रकार की विशिष्ट चीजों का वर्णन करती हैं।

4. सन्धि पाठ का अभ्यारण्य में जमा होना

अगला, कभी-कभी, लेकिन सभी ग्रंथों में नहीं, आपके पास संधि पाठ को जागीरदार के अभयारण्य में जमा करने का प्रावधान है। कभी-कभी आपके पास समय-समय पर पढ़ने का प्रावधान होता है, ताकि उस पाठ को समय-समय पर कुछ निश्चित अवसरों पर लोगों को पढ़ा जा सके, जो तम्बू में कानून की प्रति के मोज़ेक जमा और दावत के अवसर के पढ़ने में एक समानता पाता है। झोपड़ियों का. लेकिन फिर 4) गवाह; और 5) श्राप और आशीर्वाद। गवाह वे देवता हैं जो समझौते, या अनुबंध के गवाह हैं। श्राप और आशीर्वाद ऐसी चीजें हैं जो ये देवता सुनिश्चित करेंगे कि जागीरदार या तो आज्ञाकारी हो, जिस स्थिति में उसे आशीर्वाद दिया जाएगा, या यदि वह अवज्ञाकारी है, तो उसे शापित किया जाएगा।

5. संधि दस्तावेज़ वाचा समारोह का एक लिब्रेटो था

यह मूसा की ओर से आए पुस्तक के अपने प्रतिनिधित्व के साथ असंगत नहीं है। कुछ लोगों ने महसूस किया है कि एक अनुबंध के रूप में इसमें तनाव है। यह हित्ती संधि की तरह है, लेकिन क्या आपको एहसास है कि पुस्तक खुद को पतों की एक श्रृंखला के रूप में प्रस्तुत करती है। क्लाइन पृष्ठ 29 पर जो कहता है वह यह है कि संधि दस्तावेज़ अनुबंध समारोह का परिवाद था। लिब्रेटो, एक संगीत रचना के शब्द की तरह, अनुबंध समारोह के लिब्रेटो में कभी-कभी जागीरदार की प्रतिक्रिया के साथ-साथ सुजरेन की घोषणा भी शामिल होती है। इसलिए जब कोई व्यवस्थाविवरण को एक संधि पाठ के रूप में पहचानता है, तो हम इसे मूसा के एक औपचारिक शब्द के रूप में भी पहचान रहे हैं। इन मोज़ेक संबोधनों की प्रथागत अवधारणा यह है कि इन्हें स्वतंत्र रूप से संशोधित विदाई का आदेश दिया जाता है ताकि उनकी औपचारिक संरचना निश्चित औपचारिक-कानूनी परंपराओं का बारीकी से पालन कर सके। तो यह निश्चित रूप से कोई रूढ़िवादी धार्मिक पाठ नहीं है। दूसरे शब्दों में, वह जो कह रहा है वह यह है कि पुस्तक एक वाचा नवीनीकरण समारोह को दर्शाती है और सेटिंग में मोआब के मैदानों में मूसा लोगों को प्रभु के प्रति निष्ठा के नवीनीकरण के माध्यम से ले जाता है। इसलिए, इसे एक अनुबंध नवीनीकरण दस्तावेज़ के रूप में समझना पुस्तक के स्वयं के प्रतिनिधित्व के साथ असंगत नहीं है जिसमें मूसा के पतों की एक श्रृंखला शामिल है।

यहां वॉन रैड के दृष्टिकोण के साथ एक औपचारिक समानता है। लेकिन, जहां तक मतभेदों की बात है, वॉन रैड पुस्तक की अखंडता का सम्मान नहीं करता है जैसा कि पुस्तक में ही दर्शाया गया है। उनके पास अत्यधिक सैद्धांतिक सांस्कृतिक व्युत्पत्ति सिद्धांत है। इससे उनका तात्पर्य यह है, और मैंने पिछली कक्षा में इस पर चर्चा की थी, उन्हें लगता है कि यहोशू के तहत शकेम में एक सांस्कृतिक समारोह आयोजित किया गया था और उस समारोह की परंपराएं लेवियों द्वारा वर्षों और पीढ़ियों के माध्यम से आगे बढ़ाई गई थीं। समय-समय पर अनुबंध नवीनीकरण की घटनाओं के बाद, व्यवस्थाविवरण का स्वरूप काफी देर से तैयार किया गया था। अब, उन्हें लगता है कि 621 ईसा पूर्व से पहले एक शताब्दी से अधिक नहीं हुआ है कि फॉर्म सेट किया गया है ताकि उन्हें लगे कि शेकेम समारोह, इसके अनुष्ठान और इसके विचार, लेवियों द्वारा संरक्षित किए गए थे और अंततः ड्यूटेरोनॉमी की संरचना की पुस्तक थी उसी से व्युत्पन्न. इसलिए क्लाइन और वॉन रैड दोनों पुस्तक की संरचना को देखने के लिए फॉर्म-क्रिटिकल पद्धति का उपयोग कर रहे हैं, लेकिन क्लाइन इसे इस तरह से कर रहे हैं जिससे पाठ की अखंडता का सम्मान किया जा सके; वॉन रैड नहीं है.

चलिए 10 मिनट का ब्रेक लेते हैं.

6. व्यवस्थाविवरण की शुरुआत प्राचीन संधियों के रूप में होती है

संख्या 6 है: "प्राचीन संधियाँ बनते ही व्यवस्थाविवरण शुरू हो जाता है।" क्लाइन की द ट्रीटी ऑफ़ द ग्रेट किंग के पृष्ठ 30 पर वह कहते हैं, “व्यवस्थाविवरण ठीक उसी तरह शुरू होता है जैसे प्राचीन संधियाँ शुरू हुईं। 'ये के शब्द हैं,' ये व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के पहले शब्द हैं - ' ये के शब्द हैं।' पुस्तक के शुरुआती शब्दों को शीर्षक के रूप में उपयोग करने की यहूदी परंपरा वर्तमान मामले में इस पुस्तक को तुरंत एक संधि दस्तावेज़ के रूप में पहचानने में मदद करती है। व्यवस्थाविवरण 1:1 से 5 फिर शब्दों के वक्ता की पहचान मूसा के रूप में करता है, जिसने दिव्य रहस्योद्घाटन प्राप्त किया, और इसराइल को संप्रभु प्रभु की इच्छा के बारे में बताया। यहोवा वह अधिपति है जो मूसा को वाचा देता है जो उसका उप-शासनकर्ता और वाचा मध्यस्थ है। इस प्रकार यह खंड बाइबिल से इतर संधि की प्रस्तावना से मेल खाता है। संधि में प्रस्तावना वह जगह है जहाँ

महान राजा अपनी पहचान बताता है। अतः संधि का यह खंड प्रस्तावना से मेल खाता है। बाइबिल संधियाँ भी वक्ता की पहचान उस व्यक्ति के रूप में करती हैं जो इस अनुबंध के अनुसार प्रवक्ता है। पद 3 पर जाने के लिए, "मूसा ने इस्राएलियों को वही घोषित किया जो यहोवा ने उसे पूरा करने की आज्ञा दी थी।"

7. व्यवस्थाविवरण के प्रति क्लाइन का दृष्टिकोण 'दो परिचय' समस्या का समाधान

ठीक है, संख्या 7 है: "ड्यूटेरोनॉमी के लिए क्लाइन का दृष्टिकोण 'दो परिचय' समस्या को हल कर रहा है।" वह पृष्ठ 30 पर, पृष्ठ के निचले भाग पर कहते हैं, "व्यवस्थाविवरण की एकता से संबंधित एक बड़ी समस्या अध्याय 1 से 4 और 5 से 11 में 'दो परिचय' प्रपत्र की उपस्थिति है।" वह उस पर थोड़ी चर्चा करता है। क्लाइन कहते हैं, "दो परिचयों ने व्यवस्थाविवरण की वास्तविक संरचना को ख़त्म कर दिया है। एक ऐतिहासिक प्रस्तावना नियमित रूप से प्रस्तावना का अनुसरण करती है और संधि की शर्तों से पहले होती है। और व्यवस्थाविवरण 1 से 5, 1:5 से 4:49 तक, ऐसे ऐतिहासिक प्रस्तावना के रूप में सराहनीय रूप से योग्य है। तो क्लाइन जो कह रहा है वह यह है कि दो परिचय एक वाचा संरचना के रूप में व्यवस्थाविवरण की इस समझ से हल हो गए हैं।

अध्याय 5 से 26 संधि के शर्त अनुभाग के अनुरूप हैं। यह अधिपति का तीसरा प्रभाग या खंड है। वॉन रैड ने उस बड़े हिस्से को नोट किया है जिसमें अध्याय 5 से 27 और 1 से 4 तक शुरू होने वाले अध्याय एक पैरानेटिक ऐतिहासिक सर्वेक्षण के रूप में शामिल हैं। अन्य लोग 5 से 11 को 1 से 4 तक अलग करते हैं, इस सोच के साथ कि वे अध्याय 12 से 26 का परिचय हैं। लेकिन व्यवस्थाविवरण 5 से 11 को जीवन के एक अनुबंधित तरीके को समझाने के रूप में पहचाना जाना चाहिए, जैसा कि अध्याय 12 से 26 में होता है। साथ में वे घोषणा करते हैं सुजरेन की माँगें: बुनियादी दायित्व और विस्तृत दायित्व। पहला अनुभाग प्राथमिक, या बुनियादी, मांगों की अधिक सामान्य व्यापक संरचना प्रस्तुत करता है। अध्याय 12 से 26 थोक प्रस्तुत करते हैं और अधिक विशिष्ट, विस्तृत आवश्यकताएँ जोड़ते हैं। वह बाद में पृष्ठ 32 के नीचे कहते हैं, "12 से 26 तक ड्यूटेरोनोमिक शर्तों का चरित्र, आपको इस उपदेशात्मक, या पारमार्थिक , प्रकार की शैली मिलती है।" और, "12 से 26 तक ड्यूटेरोनोमिक शर्त का चरित्र कुछ कठोर शैलीगत तरीके का पालन

करते हुए एक ड्यूटेरोनोमिक लेखक की बात करने की अशुद्धि को उजागर करता है।" उनका कहना है, "कुछ संधि ग्रंथों में संधि शर्तों के रूप में यह विशेषता समानता से रहित नहीं है।" वह कहते हैं, "इस दस्तावेज़ को प्रदर्शित किया जाएगा और नवीकरण समारोह आयोजित करने में मूसा द्वारा स्वाभाविक रूप से इसका पूरी तरह से उपयोग किया जाएगा जो एक व्यक्तिगत विदाई भी थी।"

8. व्यवस्थाविवरण 5-26 संधि प्रपत्र की शर्तें

संख्या 8. मुझे संख्या 8 के अंतर्गत कहना चाहिए, अध्याय 5 से 26, संधियों की शर्तों के पहले चरण हैं। संधियों को अद्यतन किया गया, जब उन्हें अद्यतन किया गया तो उन्हें प्रथागत रूप से संशोधित किया गया। आपको कुछ अंतर मिलते हैं. उदाहरण के लिए, सब्बाथ आज्ञा में व्यवस्थाविवरण 5 में, यदि आप सब्बाथ आज्ञा की तुलना व्यवस्थाविवरण 5 से करते हैं, तो श्लोक 15, निर्गमन 20, श्लोक 11 के साथ, व्यवस्थाविवरण 5 का श्लोक 15 कहता है, "याद रखें कि आप मिस्र में गुलाम थे और प्रभु तेरा परमेश्वर अपने बलवन्त हाथ से तुझे वहां से निकाल लाया, और अब यहोवा ने तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा दी है।" यह एक नई पीढ़ी है जिसे मूसा संबोधित कर रहे हैं। निर्गमन 20 में सब्त की आज्ञा सृष्टि के 6 दिनों पर आधारित है। निर्गमन 20: "छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी और जो कुछ उन में है सब बनाया, और सातवें को विश्राम दिया; इस कारण यहोवा ने सातवें को आशीष दी, और उसे पवित्र किया।" अब निर्गमन और व्यवस्थाविवरण के बीच शर्त समान है, लेकिन बताई गई प्रेरणा अलग है। यह इस नई पीढ़ी के लिए एक ऐसी सुविधा को अद्यतन करने का परिणाम हो सकता है जो किसी संधि के नवीनीकरण की विशेषता थी।

9. व्यवस्थाविवरण 27-30 वाचा अनुसमर्थन के साधन

ठीक है, अध्याय 27 से 30: यह संख्या 9 है। व्यवस्थाविवरण 27 से 30 उस मानक रूप का अनुसरण करता है जिसे संधियों ने अनुबंध अनुसमर्थन के साधन के रूप में प्रस्तुत किया है। 26 और निम्नलिखित को अतिरिक्त सामग्री के रूप में देखना सामान्य है: पुस्तक के मूल रूप का हिस्सा नहीं बल्कि बाद में अभिवृद्धि, या परिशिष्ट। ऐसा कहना संधि पैटर्न की संरचनात्मक

निरंतरता की उपेक्षा करता है, क्योंकि अध्याय 27 से 30 में आपको अनुबंध में स्वीकृत आशीर्वाद प्राप्त हैं। यह संधि ग्रंथों की एक मानक विशेषता थी। क्लाइन के दृष्टिकोण से अध्याय 27 से 30 का विवरण इस प्रकार है। यहां एक अधिक विस्तृत रूपरेखा दी गई है: 27:1-26 आपके पास कनान में एक अनुसमर्थन समारोह है। जब आप कनान में पहुँचेंगे तो आपको माउंट एबल और माउंट गेरिजिम पर जाना होगा और वहां कानून लिखना होगा, और वहां एक अनुसमर्थन समारोह होना होगा। फिर आशीर्वाद और शाप अध्याय 28 में हैं। वाचा की शपथ 29 में है। तो फिर यह उस संधि विश्लेषण के आधार पर पुस्तक की संरचनात्मक अखंडता के साथ अच्छी तरह से फिट बैठता है। वह नंबर 9 है.

10. व्यवस्थाविवरण 31-34 अंतिम व्यवस्थाएँ [साक्षी का गीत आदि)

संख्या 10: अध्याय 31 से 34 केवल परिशिष्टों के बजाय वाचा की एक अभिन्न विशेषता के रूप में बहुत महत्व रखता है। अध्याय 31 से 34 में अधिक विस्तृत तरीके से अंतिम व्यवस्थाएं शामिल हैं 31:1-29 साक्षी का गीत है। साक्षी संधि प्रपत्र की एक संरचनात्मक विशेषता थी। आपको 31:30 से 32:37 तक गवाहों का एक गीत मिलता है। अंतर यह है कि हित्ती ग्रंथों में देवता साक्षी होंगे। इज़राइल में आपके पास बहुदेववादी धारणा नहीं है, लेकिन आपके पास गवाही का एक गीत है, जो आने वाले दिनों की प्रतीक्षा कर रहा है, जिसमें बताया गया है कि यदि आप शर्तों से हट गए तो आपके साथ क्या होने वाला है। यह पुस्तक का एक बड़ा हिस्सा है, और समग्र संरचना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। फिर मूसा का वसीयतनामा 32:48 से 33:29 में जहां वह जनजातियों पर अपने आशीर्वाद की घोषणा करता है। 34:1-12 में राजवंशीय उत्तराधिकार, जैसे ही नेतृत्व जोशुआ को सौंप दिया गया, जो वास्तव में पूरे नवीकरण समारोह का अवसर था। राजवंशीय उत्तराधिकार के बिंदु पर संधियों का नवीनीकरण किया गया था, और यहाँ बिल्कुल यही है। मूसा प्राधिकारी है, और वह निरंतरता को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी यहोशू को सौंपता है। तो फिर, हित्ती संधि प्रपत्र पर पूरी निर्भरता नहीं है लेकिन इसके संरचनात्मक विचार पूरे दस्तावेज़ की अखंडता को जोड़ते हैं।

डॉन सियान्सी द्वारा प्रतिलेखित

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित

डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन

डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया

14

15